E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

कुमारसम्भव

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

कविकुलगुरु कालिदास का सुप्रसिद्ध 'कुमारसम्भव' शृङ्गार रस प्रधान काव्य है। कुमारसम्भव विषय की विविधता, उज्ज्वल कल्पना और दीप्ततर भावों के कारण आधुनिक रुचि के अधिक अनुकूल है।

कुमारसम्भव में हिमालय की पुत्री पार्वती द्वारा घोर तपस्या के फलस्वरूप वर रूप में शिव को प्राप्त करने तथा उनसे कार्तिकेय (स्कन्द, कुमार) की उत्पत्ति का वर्णन है। सर्गानुसार कथा संक्षेप में इस प्रकार है: सर्ग १ - हिमालय वर्णन तथा पार्वती की उत्पत्ति; सर्ग २ - तारकासुर से पीड़ित देवों का ब्रह्मा के पास जाना और शिव-पार्वती के पुत्र स्कन्द द्वारा तारकासुर के वध का उपाय ब्रह्मा के द्वारा बताया जाना; सर्ग ३ - कामदेव द्वारा शिव की तपस्या का भंग किया जाना और क्रुद्ध शिव द्वारा कामदेव को भस्मसात् करना; सर्ग ४- पति के नाश पर रति का विलाप; सर्ग ५ - पार्वती की घोर तपस्या का वर्णन और ब्रह्मचारी वेशधारी शिव से पार्वती का संलाप और समागम; सर्ग ६ - विवाहेच्छुक शिव का पार्वती के याचनार्थ सप्तर्षियों को हिमालय के पास भेजना; सर्ग ७ - शिव की वरयात्रा और पार्वती-परिणय; सर्ग ८- शिव-पार्वती का दाम्पत्य जीवन, केलि-विहार-वर्णन । (कुछ विद्वान् केवल ८ सर्ग ही कालिदास की रचना मानते है)। सर्ग ९ - दाम्पत्य सुखानुभव करते हुए विविध पर्वतों आदि पर घूमकर कैलास पर्वत पर वापस आना; सर्ग १० कार्तिकेय (कुमार, स्कन्द) का गर्भ में आना; सर्ग - ११ कुमार-जन्म तथा कुमार का बाल्य-वर्णन; सर्ग- १२ कुमार का सेनापतित्व, सर्ग १३- कुमार द्वारा सैन्य-संचालन, सर्ग १४- देव-सेना का आक्रमणार्थ प्रयाण; सर्ग १५- देवासुर-सैन्य-संघर्ष, सर्ग १६- युद्ध-वर्णन, सर्ग १७- तारकासुर वध |

कुमारसंभव कालिदास की प्रतिमा का सुन्दर निदर्शन है। इसमें भाव-पक्ष और कला-पक्ष का सुमधुर समन्वय है। अलंकारों की सुन्दर छटा, वर्णनों में सजीवता, व्यापकता और स्वाभाविकता, भाषा का परिष्कार, कल्पना की उदात्तता, भावों की मनोज्ञता, रसों का सुन्दर परिपाक, रसराज शृंगार का सर्वांगीण वर्णन, तपोमूलक परिष्कृत प्रेम का महत्त्व प्रतिपादन तथा छन्दोयोजना में सिद्धहस्तता कुमारसंभव की प्रमुख विशेषताएँ हैं। इस दृष्टि से कुमारसंभव एक सफल महाकाव्य है।

कतिपय विद्वानों का मत है कि कुमारसंभव के प्रथम आठ सर्ग ही कालिदास की कृति हैं। आगे के ६ सर्ग किसी अन्य कवि की रचना है। इसके लिए भाव, भाषा, शैली, व्याकरण और छन्द सम्बन्धी दोष एवं पाद-पूर्त्यर्थक शब्द प्रयोग कारण बताए गए हैं। आठ सर्गों पर ही मल्लिनाथ की टीका का होना भी एक कारण माना गया है। अष्टम सर्ग में शिव-पार्वती की रतिक्रीड़ा का वर्णन भी आपत्तिजनक माना गया है। अतः कहा जाता है कि इन कटु आलोचनाओं के कारण कालिदास ने आगे लिखना छोड़ दिया था। परन्तु यह मन्तव्य अपुष्ट एवं अस्पष्ट आधारों पर निर्भर है। (१) मल्लिनाथ की टीका वस्तुतः ७ सर्गों पर ही है। ८वें सर्ग की टीका अत्यन्त दोषपूर्ण है, अतः मल्लिनाथ की कृति नहीं मानी जाती है। टीकाकार सीताराम कवि का भी यही मत है। (२) टीकाकार सीताराम कवि ने ८ से १७ सर्गों को कालिदास की कृति मानकर उनकी टीका की है। (३) वामन (८०० ई०) ने आक्षेपास्पद अष्टम सर्ग से उद्धरण दिया है। (४) कुमार के जन्म का वर्णन ११वें सर्ग में है। उससे पूर्व ग्रन्थ की समाप्ति का कोई कारण नहीं है। (५) अन्तिम ६ सर्गों के बिना कुमारसंभव का महाकाव्यत्व अपूर्ण रहता है । (६) भाव, भाषा, शैली आदि की हीनता के दोष सर्वथा अस्पष्ट और अपुष्ट हैं। (७) अन्तिम ६ सर्गों में भी भाव और भाषा की पुष्टि, प्रौढ़ता एवं आलंकारिक चमत्कार पग-पग पर दृष्टिगोचर होते हैं। (८) यदि भाषा, अलंकार आदि ही इसका आधार माना जाए तो रघुवंश के अन्तिम सर्गों में भी ये न्यूनताएँ सर्वथा सुलभ हैं। अतः पूरे १७ सर्गों को कालिदास की कृति मानना उचित है।

पञ्चम सर्ग इस महाकाव्य का श्रेष्ठ सर्ग है। इसमें शिव को प्रसन्न करने के लिए पार्वती की तपस्या तथा ब्रह्मचारी के वेश में समागत शिव के द्वारा पार्वती के प्रेम की परीक्षा का वर्णन है। अन्य

सभी उपायों से असाध्य शिव को तपस्या ही द्रवित करती है। शिव-पार्वती का रमणीय संवाद दिया गया है जिसमें शिव के एक-एक तर्क का उत्तर पार्वती देती जाती है।

कविता-कामिनी-कान्त कालिदास न केवल संस्कृत-वाङ्मय के, अपितु विश्व-वाङमय के मुकुटालंकार हैं। उनकी सूक्ष्म दृष्टि बाह्य-जगत् और अन्तर्जगत् की तात्त्विक विधाओं का साक्षात्कार करती हुई मनोरम पदावली में उनको अनुस्यूत करती है। उनकी कलात्मक तूलिका नीरस में सरसता, कर्कश में कोमलता, कठोर में सुकुमारता, सामान्य में विलक्षणता, दुर्बोध में सुबोधता, काव्य में सर्वात्मकता और प्रसाद में माधुर्य का संचार करती है। उनकी कलात्मक रुचि की छाप पग-पग पर दृष्टिगोचर होती है। भाषा पर उनका असाधारण अधिकार काव्य को ध्वन्यात्मक बना देता है। भावों की अगाधता और विविधता उनके काव्याकाश में इन्द्रधनुष की छटा प्रस्तुत करती हैं। उनकी माषारूपी कालिन्दी और भावरूपी भागीरथी के मध्य सालंकृत-पदावली रूपी सरस्वती संगम का महनीय वैभव उपस्थित करती है। उनकी शैली में दुरूहता में सुबोधता, काव्य में नाटकीयता, नैसर्गिक सुषमा में सालंकारता, सरलता में सरसता, सहज भावाभिव्यक्ति में कल्पना प्राचुर्य और शृंगार में भी करुण-रसाप्लावन जैसे विरोधी गुणों का समन्वय मिलता है। उनकी शैली में भाषा-सौष्ठव, मनोरम भावाभिव्यक्ति, अलंकारों का सहज-विन्यास, अन्तः और बाह्य प्रकृति का चारु चित्रण, रसों का सुन्दर परिपाक, जीवन-दर्शन की रुचिर स्थापना, विविध विद्या-निधानता और मनोभावों की मार्मिक अनभूति मनोज्ञ मणिकांचन-संयोग उपस्थित करती है। प्रकृति के साथ तादात्म्य की अनुभूति उनके काव्य-गौरव को अधिक समुन्नत करती है। इनकी शैली में कहीं उपमाओं का लालित्य है, तो कहीं अर्थान्तरन्यास का अर्थ-गाम्भीर्य; कहीं उत्प्रेक्षाओं की ऊँची उड़ान है तो कहीं प्रांजल पदावली का सौकुमार्य; कहीं प्रसाद है तो कहीं माधुर्य; कहीं कला प्रधान है तो कहीं कल्पना।

कालिदास का युग भारतीय संस्कृति का स्वर्णकाल था। इस युग में वैदिक आर्यों के पराक्रम और कर्मण्यता तथा महाभारत और रामायण युग के अभिनिवेश के पुनर्जागरण के साथ ही कलाविलास का सर्वोपरि चमत्कार दृष्टिगोचर होता है।

कुमारसम्भव महाकाव्य का औदात्त्य प्रारम्भ से ही इसकी अलौकिक भूमिका से व्यक्त होता है। प्रथम श्लोक में ही जिस हिमालय की चर्चा है, उसका भौतिक रूप अद्वितीय गरिमा से महिमशाली है। कालिदास का कहना है कि यह देवात्मा है, पर्वतों का राजा है और पृथिवी का मानदण्ड है।

कुमारसम्भव महाकाव्य में देवताओं के आदर्श को मानव-समाज में प्रचारित करने के लिए कालिदास ने उन्हें आचार-व्यवहार में मनुष्यता के अतिशय निकट ला दिया है।

कालिदास की रसनिष्पत्ति विषयक सर्वोच्च सम्पत्ति को देखकर उन्हें रसेश्वर की उपाधि दी गई है। राजशेखर ने कालिदास के शृङ्गारत्मक ललितोद्गार की प्रशंसा ही है। कालिदास की अन्य रचनाओं की भाँति कुमारसम्भव का शब्द-चयन वैदर्भी रीति और प्रसादगुण से मण्डित है। कालिदास की शैली व्यञ्जनामयी है। कालिदास की दृष्टि में सर्वप्रथम आकर्षण की वस्तु रूप-सौन्दर्य है, जिसका सर्वातिशायी अभ्युदय नायक-नायिका के लिए यौवन में और प्रकृति के लिए वसन्त ऋतु में सम्भव होता है। कवि का यह दृष्टिकोण सर्वसाधारण की शाश्वत मान्यता को देखकर ही आता है। कालिदासीय सौन्दर्य के प्रतिमान प्रकृति में विराजमान हैं।

कुमारसम्भव में कवि ने अपने जीवन-दर्शन को बहुत बड़ी पट-भूमिका पर रखकर व्यक्त करने का प्रयास किया है। त्याग के साथ ऐश्वर्य का और तपस्या के साथ प्रेम का मिलन होने पर ही स्त्री और पुरुष का प्रेम धन्य होता है। त्याग और भोग के सामञ्जस्य से ही जीवन चरितार्थ होता है।